जोतिबा फुले

महान समाज सुधारक

प्रो. डॉ. विमलकीर्ति

जोतिबा फुले

1827-1890

पूरा नाम जोतिराव गोविंदराव फुले। महाराष्ट्र के प्रमुख समाज सुधारक और दलितों के दार्शनिक। इन्होंने किसानों और स्त्री की गुलामी के सवालों को भी उठाया। शिवाजी का पंवारा लिखा। 'गुलामगिरी' उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। उन्होंने 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना करके दलितों और गरीबों की जिंदगी में उत्थान लाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयत्न किया। मराठा जाति के स्वाभिमान के प्रति भी चिंता। 1882 में तिलक और आगरकर की जेल से रिहाई पर उनका एक साथ अभिनंदन। इस तरह साम्राज्यवाद-विरोध और जातिवाद-विरोध के बीच बौद्धिक सेतु का निर्माण। दलितों के बीच नवजागरण के सबसे बड़े स्तंभ।

आधुनिक भारत में

सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से, सामाजिक बदलाव की दृष्टि से जिन महापुरुषों ने काम किया है, क्रान्तिकारी विचार दिये हैं उनमें महामानव जोतिबा फुले का नाम और काम बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक भारत में कुछ महापुरुष ऐसे हुए हैं जो केवल भारतीय समाज में सुधार की बात करते थे, परम्परागत सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कुरीतियों को समाप्त करने की बात करते थे। लेकिन भारतीय समाज में, हिन्दू समाज व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की बात, जातिभेद, जाति-व्यवस्था, अछूतपन, नारी का समाज में निम्न स्थान समाप्त करने की बात वे लोग नहीं करते थे।

महामानव जोतिबा फुले आधुनिक भारत के इन समाज सुधारकों से एकदम अलग सोच रखने वाले थे। वे परंपरागत भारतीय समाज व्यवस्था को वर्णवादी, जातिवादी, विषमतावादी और मानवीय शोषण की व्यवस्था मानते थे। जो समाज व्यवस्था मानवीय शोषण पर आधारित है उस व्यवस्था को बदलना चाहिए यही उनका चिंतन था यही उनका कार्य था और उन्होंने अपने संपूर्ण साहित्य में इसी बात को स्पष्ट रूप से लिखा है। महामानव जोतिबा फुले का सम्पूर्ण साहित्य आधुनिक भारत में सामाजिक क्रान्ति का साहित्य है।

महामानव जोतिबा फुले का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ। लेकिन उनका सामाजिक कार्य, और सामाजिक जन्म पूना में हुआ। मतलब उन्होंने अपने सामाजिक जीवन की शुरुआत पूना से की है। जोतिबा फुले का जन्म सन् 1827 में हुआ और उनका परिनिर्वाण 1890 में हुआ। तात्पर्य यह कि वे 63 साल तक जीवित रहे। किसी भी सामाजिक व्यक्तित्व के लिए 63 साल की आयु कोई बहुत बड़ी आयु नहीं होती है। लेकिन 63 साल की आयु में उन्होंने जितना सामाजिक कार्य किया है, जितना लिखा है, उतना बहुत ही कम व्यक्तियों द्वारा किया गया है। जोतिबा फुले को समझने के लिए उनके साहित्य को समझना जरूरी है। उसी प्रकार उनके कार्य और विचारों को अच्छी तरह समझने के लिए

तत्कालीन भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति को भी समझना जरूरी है।

जोतिबा फुले के समय संपूर्ण भारतवर्ष में अंग्रेजों की राजसत्ता स्थापित हो चुकी थी। लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक दृष्टि से महाराष्ट्र में और संपूर्ण देश में भी ब्राह्मण पण्डा-पुरोहित वर्ग का घोर वर्चस्व बरकरार था।

एक तरफ राजनीतिक दृष्टि से भारत पर अंग्रेजों की सत्ता थी तो दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक दृष्टि से देश पर ब्राह्मणों की सत्ता थी। अगर हम महाराष्ट्र की ही बात करें तो महाराष्ट्र में जोतिबा फुले के शब्दों में शूद्र और अतिशूद्र समाज के लोग किसान, खेतिहर मजदूर और अछूत जाति के लोग गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध किताब 'गुलामगिरी' और 'किसान का कोडा' (शेत कमांचे आसूड) में इस बात को बहुत ही अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। महामानव जोतिबा फुले के समय पूना से पेशवाओं (ब्राह्मण) की राजनीतिक सत्ता समाप्त हो चुकी थी। लेकिन ब्राह्मणों का (पेशवाओं का) सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक वर्चस्व पूना में अभी बरकरार था। जब पूना में पेशवाओं की राजसत्ता थी उस समय ब्राह्मणों को शासन और प्रशासन में, समाज में, धर्म में पद प्राप्त होते थे। और पेशवाओं के राज में शूद्र तथा अतिशूद्र समाज की स्थिति जानवर से भी खराब थी धर्म के नाम पर दानधर्म की बारिश भी केवल ब्राह्मणों पर ही होती थी। उस समय ज़मींदार और साहूकार भी ब्राह्मण ही होते थे। पेशवाओं के राज में जिस प्रकार की शूद्र और अतिशूद्र समाज की स्थिति थी उसी प्रकार की महिलाओं की भी स्थिति थी। उस समय के समाज में कई प्रकार की अमानवीय धार्मिक रूढ़ियाँ और परम्पराएँ प्रचलित थी और इन तमाम अमानवीय रूढ़ियों को, परम्पराओं को धर्म माना जाता था। महात्मा फुले के समय भी पूना में इसी प्रकार की स्थिति थी। यहां अंग्रेजों की राजसत्ता थी लेकिन अंग्रेज सत्ताधारी लोग ब्राह्मणों की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे। भारत में अंग्रेजों का उद्देश्य केवल यही था कि वे अपनी सत्ता को बरकरार रखें और परम्परागत भारतीय जातिव्यवस्था, समाज व्यवस्था, धर्म व्यवस्था में ब्राह्मणों सहित तथाकथित उच्च जातियों के वर्चस्व को बरकरार रहने दें।

उस समय भारत की इस परम्परागत धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था के खिलाफ महात्मा जोतिबा फुले ने पूना से अपने कार्य की शुरुआत की। उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों को प्रारम्भ करने से पहले भारत की जो परम्परागत धर्म व्यवस्था है, धार्मिक साहित्य है, धर्मग्रंथ है उनकी चिकित्सा की,

उनका विश्लेषण किया। उन्होंने वेदों की चिकित्सा की, पुराणों की चिकित्सा की, मनुस्मृति आदि स्मृति ग्रंथों की चिकित्सा की। उन्होंने वेदनीति को भेदनीति कहकर उनकी भर्त्सना की और प्राचीन भारत के इतिहास में भगवान बुद्ध ने, बौद्ध धर्म में जो सामाजिक क्रान्ति का कार्य किया उसकी प्रशंसा की। महात्मा फुले की यह मान्यता थी कि भारत में शूद्रों को (पिछड़ी जातियाँ), अतिशूद्रों को (अछूत

जातियाँ), नारी वर्ग को ब्राह्मणों ने शिक्षा प्राप्त करने का, पढ़ने-लिखने व आगे बढ़ने का अधिकार नहीं दिया। ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों और अति शूद्रों के शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार छीन लेने की वजह से ही उनका विनाश और पतन हो गया है। वे कहते हैं कि–

विद्या बिन मति गई,
मति बिन नीति गई,
नीति बिन गति गई,
गति बिन धन गया,
धन बिन शूद्र पतित हुए,
इतना घोर अनर्थ अविद्या से हुआ।।

इसलिए वे शूद्रों में, अतिशूद्रों में और नारी समाज में शिक्षा के प्रसार-प्रचार के कार्य की शुरुआत करते हैं।

महात्मा फुले के पहले चरित्र लेखक पंढरीनाथ सीताराम पाटील कहते हैं कि, मानवीय अधिकारों का समर्थन करते हुए आधुनिक काल में स्त्रियों की शिक्षा के बारे में सब से पहले विचार करने वाले यदि कोई हैं तो वे हैं जोतिबा फुले। आधुनिक काल में भारत में जोतिबा फुले ने ही सबसे पहले लड़कियों के लिए निजी पाठशाला प्रारम्भ करके स्त्री शिक्षा की बुनियाद रखी। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि, लड़कियों की पाठशाला शुरू करने से पहले उन्होंने अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को लिखना-पढ़ना सिखाया। उन्होंने पहले सावित्री बाई को साक्षर किया।

सन् 1848 की बात है। जोतिबा फुले ने पूना के बुधवार पेठ में भिडे की सराय में लड़कियों के लिए पहली पाठशाला शुरू की। और उस पाठशाला में सावित्रि बाई एक अध्यापिका के रूप में पढ़ाने लगीं। जोतिबा फुले के इस कार्य को देखकर ब्राह्मण समाज तिलमिला उठा और तेरह तेरह की विद्रोही आवाजें उठने लगीं कि फुले धर्मभ्रष्ट हो गया, अधर्मी हो गया, लेकिन जोतिबा फुले ने ऐसे ब्राह्मणों की कोई पर्वाह नहीं की।

सन् 1852 में मुम्बई प्रदेश के गवर्नर पूना आये थे। उनके सामने जोतिबा फुले ने कहा कि, 'मैंने विशेष कुछ नहीं किया है, मैंने अपना कर्तव्य किया है। हम सभी को इसी काम को आगे बढ़ाना चाहिए, और सरकार को सबसे पहले नारी शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। महात्मा फुले नारी शिक्षा के

महत्त्व को अच्छी तरह जानते थे। आज सभी लोग अपनी-अपनी रूढ़ियों से, धार्मिक मान्यताओं से ऊपर उठकर नारी शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करने लगे हैं। लेकिन पता नहीं भारत की कितनी नारियों को यह मालूम है कि नारी शिक्षा की शुरुआत करनेवाले और नारी शिक्षा का समर्थन करने वाले महात्मा फुले पहले व्यक्ति थे। और सावित्रीबाई फुले पहली भारतीय अध्यापिका थीं।
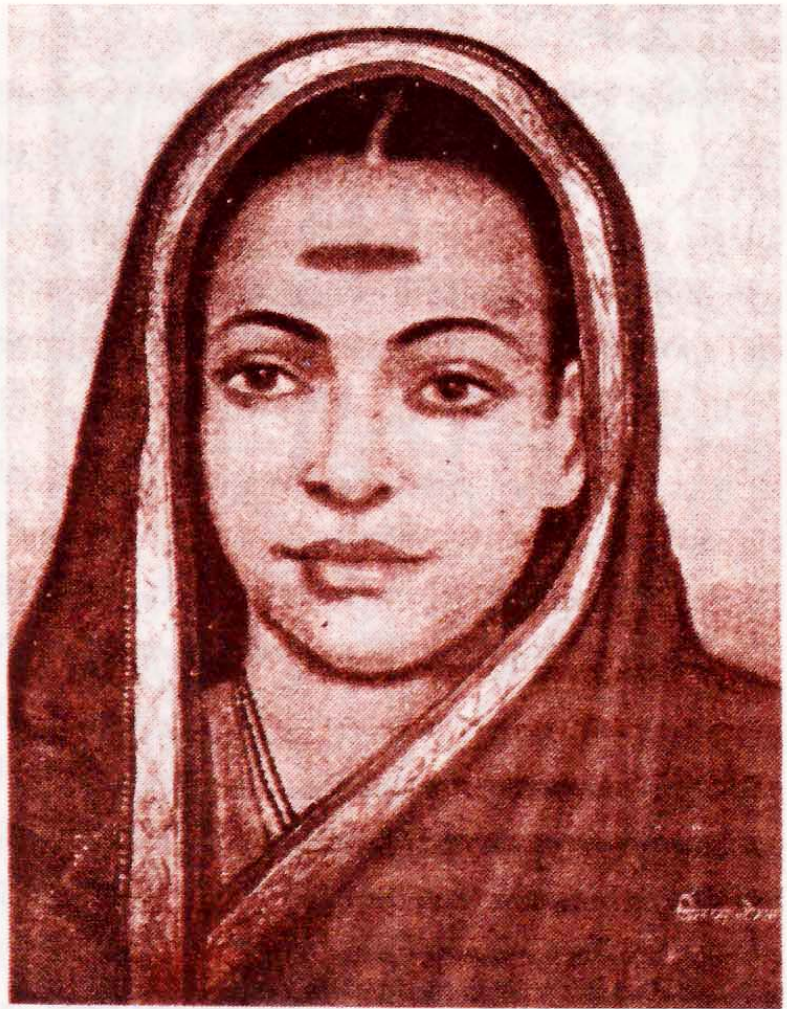
उसके बाद महात्मा फुले ने सन् 1851 में पूना में नाना पेठ में अछूतों के बच्चों के लिए पहली पाठशाला शुरू की। इस पाठशाला के शुरू होने से पूना के सनातनी ब्राह्मणों में हड़कम्प मच गया था। ब्राह्मणों की यह धार्मिक मान्यता थी कि स्त्री, शूद्र और अतिशूद्र समाज के लोग जन्म से ही अपवित्र होते हैं। इसलिए उनको पढ़ने-लिखने का अवसर देना, अधिकार देना ब्राह्मणों की दृष्टि से महा पाप था।

महात्मा फुले का अछूतों के बच्चों के लिए इस तरह की पाठशाला शुरू करना पढ़े-लिखे ब्राह्मणों को भी पसंद नहीं आया। लेकिन महात्मा फुले ने अपने इस कार्य को जारी रखा बगैर किसी की परवाह किये। अपने इस कार्य के लिए महात्मा फुले को ब्राह्मणों की ओर से काफी अपमान भी सहने पड़े, कुछ लोगों ने तो उनको जान से मारने का भी प्रयास किया लेकिन वे अपने सामाजिक संकल्पों के प्रति प्रतिबद्ध थे। जोतिराब फुले ने अछूतों के बच्चों के अलावा प्रौढ़ लोगों के लिए भी रात्रिपाठशाला शुरू की थी। जिसका लाभ बहुजन समाज के प्रौढ़ लोगों को मिला।

महात्मा फुले ने हिन्दू समाज में (उच्च वर्णियों में) व्याप्त अमानवीय रूढ़ियों की भी घोर निंदा की और उन्होंने नारी जाति को उनका मानवीय हक प्राप्त हों इसका पूरा प्रयास किया। उन्होंने पुनर्विवाह, विधवा विवाह का समर्थन किया। वास्तव में विधवा विवाह या पुर्नविवाह की समस्या शूद्र और अतिशूद्र समाज की समस्या नहीं थी। बल्कि यह समस्या ब्राह्मण और सभी तथाकथित उच्च जातियों की समस्या भी थी। महात्मा फुले की यह मान्यता थी कि विधवाओं को पुनर्विवाह करने का हक़ न होना एक तरह से उनपर अमानवीय अन्याय है। इस अन्याय को दूर करने के लिए और पुनर्विवाह की पद्धति की शुरुआत उन्होंने सन् 1864 में पहला पुनर्विवाह करवा कर की और वह भी पूना में। उन्होंने पूना में ही विधवाओं की संतानों के लिए अपने ही पैसों से एक बाड़ा बनवाया और ऐसी संतानों के पालन-पोषण की व्यवस्था की। इसका ज्यादातर लाभ ब्राह्मण महिलाओं को ही हुआ। परन्तु धार्मिक कट्टरता के कारण महात्मा फुले के इस समाज कल्याण के कार्य का सबसे ज्यादा विरोध भी ब्राह्मणों ने ही किया।

आजाद भारत में हम लोग अंग्रेजों को बहुत क्रूर सिद्ध करने का पूरा प्रयास करते है। किसी भी प्रकार की क्रूरता का, अमानवीयता का निषेध होना चाहिए। यदि हम अपने देश के सामाजिक, सामंती

इतिहास को पढ़ें, तो पता चलता है कि जाति और धर्म के नाम पर अछूतों के साथ जो अन्याय हुआ है और हो रहा है वह अंग्रेजी शासकों के अन्याय से किसी भी रूप में कम नहीं था। भारत में अछूतों की छांव से भी लोग अपवित्र हो जाते थे। सवर्ण हिन्दू लोग अछूतों के पांवों के जमीन पर पड़े चिह्न छू जाने से भी अपवित्र हो जाते थे। ऐसे समय में महात्मा फुले ने पूना में सन् 1868 में अपने घर का पानी का हौद अछूतों को पानी भरने के लिए खोल दिया। इस तरह के अछूतपन समाप्त करने के, जाति व्यवस्था को समाप्त करने के काम महामानव फुले ने किये।

महात्मा फुले ने अपने विचारों को जन-मन तक पहुंचाने के लिए सन् 1873 में 'सत्यशोधक समाज' के माध्यम से हिन्दू धर्म के लिए एक विकल्प देने का प्रयास किया। वे किसी भी प्रकार की धर्मान्धता, बाबागिरी, धार्मिक पाखण्ड, कर्मकाण्ड के सख्त विरोधी थे। उन्होंने अपने सार्वजनिक और निजी जीवन को भी पूरी तरह से विशुद्ध रखा था। उन्होंने तृतीय रत्न (नाटक), छत्रपति शिवाजी का पंवारा, ब्राह्मणों की चालबाजी, गुलामगिरी, किसान का कोडा, सत्सार, सत्यशोधक समाज पूजा-विधि और सार्वजनिक सत्यधर्म आदि दस से भी ज्यादा ग्रंथों की रचना कर के आधुनिक भारत में सामाजिक क्रान्ति के कार्यो, विचारों की नींव रखी। महामानव फुले के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी वे देश के सभी सामाजिक परिवर्तनवादी संगठनों की प्रेरणा हैं, आदर्श हैं। आधुनिक भारत का सामाजिक चिन्तन और दर्शन महात्मा फुले के बगैर अधूरा है।

सत्य

गणपतराव दर्याजी थोरात : हमें किसको सत्य आचरण करने वाला कहना चाहिए?

जोतिराव फुले : सत्य आचरण करने वाले के संबंध में कुछ नियम दे रहा हूँ, वे निम्न प्रकार हैं :

1. हम सभी के निर्माणकर्ता ने सभी जीव-प्राणियों को पैदा किया है। लेकिन उनमें नर और नारी दोनों जन्म से ही स्वतंत्र हैं। वे दोनों सभी अधिकारों का उपभोग करने के योग्य बनाए गए हैं, यह जो लोग स्वीकार करते हैं, उन्हीं को सत्य आचरण करने वाला कहना चाहिए।

2. नारी हो या पुरुष, वह अपने निर्माणकर्ता के इस विशाल आकाश में स्थित अनंत सूर्यमंडलों को और उनके ग्रहों-उपग्रहों को या किसी विचित्र तारे को या किसी धातु-पत्थर की मूर्ति को निर्माता के अलावा न पूजता हो तो, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

3. हम सभी के निर्माणकर्ता द्वारा उत्पन्न की हुई सभी चीजों का पूरी तरह से सभी प्राणियों को उपभोग करने की अनुमति न देते हुए निर्माता के नाम से बेमतलब अर्पण करके उसका खोखला नाम स्मरण जो लोग नहीं करते, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

4. जो हम सभी के निर्माणकर्ता द्वारा पैदा किए हुए सभी प्राणियों को सभी चीजों का मनचाहे उपभोग करके उनको निर्माता का आभार मानकर उसका गौरव करने देता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

5. विश्वकर्ता द्वारा निर्मित सभी प्राणियों के लिए जो किसी भी प्रकार की बेमतलब की परेशानी नहीं पैदा करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

6. हम सभी के निर्माता ने सभी नारी-पुरुषों को सभी मानवी अधिकारों का मुख्य हकदार बनाया है। उनमें किसी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का समूह किसी व्यक्ति पर जोर-जबर्दस्ती नहीं कर

सकता और उस तरह जोर-जबर्दस्ती न करने वाले व्यक्ति को ही सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

7. हम सभी के निर्माता ने सभी मानव नारी-पुरुषों को धार्मिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता दी है, उससे किसी दूसरे व्यक्ति को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जा सकती, यह मानकर जो कोई अपनी तरह दूसरे व्यक्ति के हकों को जानकर दूसरों को सताता नहीं, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

8. हम सभी के निर्माता ने प्राणियों को पैदा किया है। उनमें हर एक नारी मात्र एक पुरुष से अपना ब्याह करके बाकी पुरुषों को भाई माने, ऐसे ही हर एक पुरुष एक नारी को अपनी बीवी बनाकर बाकी नारियों को अपनी बहनें माने। इस तरह जो नारी या पुरुष एक-दूसरे के साथ बड़ी खुशी से भाई-बहन की तरह आचरण करता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

9. हम सभी के निर्माता ने सभी नारियों को या पुरुषों को सभी मानवी अधिकारों के बारे में जो चाहे वे विचार या अपने मनचाहे मतों को अभिव्यक्त करने के लिए, लिखने के लिए और प्रसिद्ध करने के लिए स्वतंत्रता दी है। लेकिन इन विचारों से और इन मतों से किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होनी चाहिए, इसकी खबर जो रखता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

10. हम सभी के निर्माता की व्यवस्था से जो सभी नारी-पुरुष दूसरों के धर्म के बारे में मतभिन्नता की वजह से या राजनीतिक कारणों से उनको किसी भी तरह नीच नहीं मानते और न उनका शोषण करते हैं, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

11. हम सभी के निर्माता ने सभी नारी-पुरुषों को धर्म के संबंध में स्थानिक या क्षेत्रीय अधिकारों के पद उनकी योग्यता के अनुसार और सामर्थ्य के अनुसार मिलना चाहिए, इसके लिए उनको समर्थ बनाया है, ऐसी बातों को जो लोग स्वीकार करते हैं, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

12. हम सभी के निर्माता के नियमों के अनुसार सभी मानव नारी-पुरुषों में धर्म, स्थानीय और क्षेत्रीयता संबंधी हर मनुष्य की स्वतंत्रता, संपत्ति संरक्षण और उसके जुल्म से बचाव करने के बारे में जो

लोग कठिनाइयाँ पैदा नहीं करते, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

13. नारी या पुरुष जो लोग अपने माता-पिता से बुढ़ापे में सलाह-मंत्रणा करते हैं और अन्य बुजुर्गों को सम्मान देते हैं या जो माता-पिता से सलाह-मंत्रणा करके अन्य बुजुर्गों को सम्मान देनेवालों को बड़ा आदर देते हैं, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

14. नारी या पुरुष, जो हकीम की आज्ञा के बिना अफीम, भाँग, मद्य आदि नशीले पदार्थों का सेवन करके हर तरह से अन्याय करने में नहीं लगा होता या नशीले पदार्थ सेवन करने वाले को आसरा नहीं देता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

15. खटमल, जूँ, पिस्सू आदि जंतु, बिच्छू, साँप, बाघ, सिंह, लकड़बग्घे आदि जानवरों और उसी तरह लोभी मानव, दूसरे मानव प्राणी की हत्या करने वाले या आत्महत्या करने वालों को छोड़कर जो नारी या पुरुष दूसरे मानव प्राणियों की हत्या नहीं करता या हत्या करने वाले की सहायता नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

16. नारी या पुरुष, जो अपने फायदे के लिए दूसरे का नुकसान करने के लिए झूठ नहीं बोलता, या झूठ बोलनेवाले की मदद नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

17. नारी या पुरुष, जो व्यभिचार नहीं करता या व्यभिचार करने वालों का सम्मान नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

18. नारी या पुरुष, जो किसी भी प्रकार की चोरी नहीं करता या चोरों की मदद नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

19. नारी या पुरुष, जो घृणा से दूसरों के मकान को या उनके सामान को जलाता नहीं या आग लगानेवालों से कोई संबंध नहीं रखता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

20. नारी या पुरुष, जो स्वयं के स्वार्थ के लिए न्याय से राज करने वाली रियासतों पर या राज्य पर या सारी प्रजा द्वारा मुखिया बनाए हुए प्रतिनिधि के विरोध में विद्रोह करके लाखों परिवारों को बर्बाद नहीं करता या विद्रोह करने वालों को पनाह नहीं देता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

21. नारी या पुरुष, जो 'सारी दुनिया के कल्याण के लिए यह धर्म पुस्तक बनाई गई है' कहकर

बड़ी बकवास करता है, किंतु उस धर्म पुस्तक को अपनी बगल में दबाकर दूसरे लोगों को दिखाता तक नहीं, ऐसे दुष्ट बड़ाईखोरों से जो शुद्ध रहते हैं और उन पर भरोसा नहीं करते, उनको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

22. नारी या पुरुष, जो अपने परिवारों के साथ, अपने भाई-बहनों को, अपने रिश्तेदारों को और अपने दोस्तों को बड़े घमंड से खानदानी श्रेष्ठ मानकर स्वयं को पवित्र नहीं मानता और सभी मानव प्राणियों को खानदानी नफरत के जरिए अपवित्र मानकर उनको नीच नहीं मानता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

23. नारी या पुरुष, जो प्राचीनकाल में घृणा से लिखे गए ग्रंथों की शिक्षा के आधार पर कुछ मानव समाजों को खानदानी गुलाम नहीं मानता या उनको दास मानने वालों की परवाह नहीं करता, उसको सत्यवर्तन करने वाला जानना चाहिए।

24. नारी या पुरुष, जो अपने लोगों की प्रभुता कायम रखने के लिए स्कूल में पढ़ाते समय अन्य लोगों के बच्चों से परायेपन का व्यवहार नहीं करता या स्कूल में पढ़ाते समय परायेपन का व्यवहार करने वालों का निषेध करता है, उसको सत्यवर्तन करने वाला जानना चाहिए।

25. नारी या पुरुष, जो न्यायमूर्ति के पद पर विराजमान होने के बाद अन्यायी लोगों का, उनको जुर्म के अनुसार सजा देने में कोई कसर बाकी नहीं रखता या अन्याय करने वालों का निषेध करता है, उसको सत्यवर्तन करने वाला जानना चाहिए।

26. नारी या पुरुष, जो खेती का काम करके या अन्य प्रकार की कारीगरी करके पेट पालनेवालों को श्रेष्ठ मानता है, और किसानों की सहायता करने वालों का आदर-सत्कार करता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

27. नारी या पुरुष, जो चमार के घर का ही क्यों न हो, बेगारी का काम करके अपना पेट पालनेवालों को नीच नहीं मानता बल्कि उस काम में मदद करने वालों की प्रशंसा करता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

28. नारी या पुरुष, जो स्वयं कोई व्यवसाय किए बगैर ही बेमतलब धार्मिकता का दिखावा नहीं करता और अज्ञानी लोगों को नवग्रहों का डर बताकर उनको लूट करके नहीं खाता या उसके बारे में

तथा किताबों की रचना करके अपना पेट नहीं पालता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

29. नारी या पुरुष, जो श्रद्धावान मूर्ख को फुसलाकर खाने के लिए ब्रह्मर्षि का स्वांग रचाकर उनको राख-धूप नहीं देता या वैसे काम के लिए किसी भी प्रकार की मदद नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

30. नारी या पुरुष, जो काल्पनिक भगवान की शांति करने के बहाने आसन लगाकर अज्ञानी जनों को लूटकर खाने के लिए जपजाप करके अपना पेट नहीं भरता या उसके लिए किसी भी प्रकार की सहायता नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

31. नारी या पुरुष, जो अपना पेट पालने के लिए अज्ञानी जनों में कलह पैदा नहीं करता या उसके लिए मदद करने वालों की छाया को छूना भी पसंद नहीं करता, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

32. नारी या पुरुष, जो हम सभी के निर्माता द्वारा पैदा किए हुए प्राणियों में से मानव नर-नारियों में किसी भी प्रकार की पसंदगी-नापसंदगी रखे बगैर उनका खाना-पीना और पहनना आदि के बारे में किसी भी प्रकार का विधि-निषेध किए बगैर ही उनके साथ पवित्र मन से आचरण करता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

33. नारी या पुरुष, जो सभी मानव नर-नारियों में किसी के प्रति पसंदगी-नापसंदगी रखे बगैर उनमें से महारोगी को, अपाहिज को और बेसहारा बच्चों को अपनी क्षमता के अनुसार मदद करता है या मदद करने वाले को सम्मान देता है, उसको सत्य आचरण करने वाला जानना चाहिए।

—जोतिबा फुले, 1889

जोतिराव गोविंदराव फुले (11 अप्रैल 1827 - 28 नवंबर 1890), जो ज्योतिबा फुले के नाम से प्रसिद्ध हैं, महान विचारक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। उनका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। पुणे उनकी कर्मभूमि बना। यह वह समय था जब समाज पर ब्राह्मण वर्ग का वर्चस्व था और शूद्र तथा दलित गुलामी की जिंदगी बिता रहे थे। महात्मा फुले ने शोषण और अपमान की इस व्यवस्था का तीव्र विरोध किया और सामाजिक समानता के विचार फैलाए। 'गुलामगीरी' उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। स्त्री शिक्षा के प्रसार में उनका योगदान ऐतिहासिक महत्व का है। विधवा विवाह के वे प्रबल समर्थक थे। जोतिबा फुले ने अछूतों के लिए भी पाठशालाएँ खोलीं। धर्म के क्षेत्र में तात्विक सुधार लाने के उद्देश्य से उन्होंने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। आधुनिक युग में सामाजिक क्रांति के सूत्रधारों में महात्मा फुले का नाम प्रथम पंक्ति में रखे जाने के योग्य है।